



माध्यान्ह आरती

दुपारी १२ वाजता

(मध्यान्ह आरती – दोपहर १२ बजे)

(१) अभंग

घेउनियां पंचारती। कर्स बाबासी आरती॥
कर्स साईंसी आरती। कर्स बाबासी आरती॥१॥
उठा उठा हो बांधव। ओंबालूँ हा रमाधव॥
साईं रमाधव। ओंबालूँ हा रमाधव॥२॥
कस्त्रीयां स्थीर मन। पाहूँ गंभीर हें ध्यान॥
साईंचे हें ध्यान। पाहूँ गंभीर हें ध्यान॥३॥
कृष्णनाथा दत्तसाई। जछो चित्त तुझे पायी॥ साईं
तुझे पायी। जछो चित्त तुझे पायी॥४॥

(२) आरती

आरती साईंबाबा सीख्यदातार जीवा। चरणरजातली।
धावा दासां विसांवा, भक्तांविसांवा॥
आरती साईंबाबा॥

जाकुनियां अनंग। स्वस्वरपीं राहे दंग। मुमुक्षुजनां
दाखी। निज डोळां श्रीरंग, डोळां श्रीरंग।
आरती साईंबाबा॥१॥

जथा मनी जैसा भाव। तथा तैसा अनुभव।
द्वाविसी द्याधना। ऐसी तुझी ही भाव, तुझी ही भाव।
आरती साईंबाबा॥२॥

तुमधे नाम ध्यातां। हरे संसृतिव्यथा। अगाध तव
करणीमार्ग द्वाविसी अनाथा, द्वाविसी अनाथा।
आरती साईंबाबा॥३॥

कल्युणी अवतार। सगुणब्रह्म साचार। अवतीर्ण
ज्ञालासे। स्वामी दत्त दिगंबर, दत्त दिगंबर।
आरती साईंबाबा॥४॥

आठां दिवसां गुरुवारी। भक्त करिती वारी।
प्रभुपद पहावया। भवभय निवारी, भय निवारी।
आरती साईंबाबा॥५॥

माझा निजद्रव्यठेवा। तव चरणरज सेवा। मांगणे
हेंथि आता। तुम्हा देवाधिदेवा, देवाधिदेवा।
आरती साईंबाबा॥६॥

इच्छत दीन चातक। निर्मल तोय निज सुख।
पाजावे माधवा या। साभाळ निज आपुली भाक,
आपुली भाक। आरती साईंबाबा॥७॥

आरती साईंबाबा सीख्यदातार जीवा।
चरणरजातली। धावा दासां विसांवा, भक्तां
विसांवा॥ आरती साईंबाबा॥

(२) (अ) आरती

जय देव जय देव दत्ता अवधृता। साईं अवधृता।
जोङ्गुनि कर तव चरणीं ठेवितो माथा।
जय देव जय देव॥

अवतरसी तं येतां धर्मते ग्लानी। नास्तिकान्नाही त
लाविसि निजभजनी। दाविसि नाना लीला असंख्य
रूपानी। हरिसी दीनांचे त संकट दिनरजनी॥
जय देव जय देव॥१॥

यवनस्वरूपी एक्या दर्शनि त्वां दिघले। संशय
निरसुनियां तददेता धालविले। गोपीचंदा मंदा त्वांधी
उङ्गरिले। मोमिन वंशी जन्मुनि लोकां तारियले॥ जय
देव जय देव॥२॥

धद न तत्वीं हिंदूयवनांधा कांही। द्वावायासी ज्ञाला
पुनरपि नरकेही। पाहसिं प्रेमाने त हिंदू यवनाही।
दाविसि आत्मत्वाने व्यापक हा साई॥
जय देव जय देव॥३॥

देवा साईंनाथा त्वत्पदनत व्हावे। परमायामोहित
जनमोचन इणीं व्हावे। त्वत्क्षया सकलांचे संकट
निरसावे। देशिल तरि दे त्वद्यथ कृष्णाने गावे॥
जय देव जय देव॥४॥

जय देव जय देव दत्ता अवधृता। साईं अवधृता।
जोङ्गुनि कर तव चरणीं ठेवितो माथा।
जय देव जय देव॥

(३) अभंग

शिरडी माझे पंढरपुर। साईंबाबा रमावर।
साईं रमावर, साईंबाबा रमावर॥

शुद्ध भवित चंद्रभागा। भाव पुङ्लीक जागा।
पुङ्लीक जागा, भाव पुङ्लीक जागा॥

या हो या हो अवधे जन। करा बाबासी वंदन।
बाबासी वंदन, करा बाबासी वंदन॥

गण म्हणे बाबा साईं। धांव पाव माझे आई।
पाव माझे आई, धांव पाव माझे आई॥

(४) नमन

धालीन लोटांगण, वंदीन चरण
होळ्यांनीं पाहीन रुप तुळे ॥
प्रेमे आलिंगन, आनंदे पूजिन
भावे ओंवाळिन म्हणेनामा ॥१॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्व सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव
त्वमेव सर्वे भम् देवदेव ॥२॥

कायेनवाचा भनसेंद्रियैवा
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात।
करोमि यथत्सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ॥३॥

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्णदामोदरं वासुदेव हरिम।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकीनायकं रामचंद्रं भजे ॥४॥

(५) नामस्मरण

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ (इति निशा)

(६) पूष्पांजली

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजंत देवास्तानि धर्माणि
प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सर्वत यत्र
पूर्वे साध्या संति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसद्यासाहिने नमो वर्य
वैश्रवणाय कमहि। स मे कामान्कामकामाय मह्या
कामेश्वरो वैश्रवणो दद्यातु। कुबेराय वैश्रवणाय
महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति।

साम्राज्यं भीज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं
माहाराज्यमाधिपत्यमयं समंतपययी स्यात्सार्वभीमः
सावयिष आंतादापराधति पृथिव्यै समुद्रपर्यताया
एकराळिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः
परिवेष्टारो मरुत्स्यावसन्नृहे। आविक्षितस्य
कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

(७) नमस्काराष्टक

अनंता तुला ते कसे रे स्तवावें। अनंता तुला ते
कसे रे नमावें। अनंता मुखांचा शिणे शेष नातां।
नमस्कार साष्टांग श्री साईनाथा ॥१॥

स्मरावें मनीं त्वत्पदां नित्य भावें। उरावें तरी
भक्तिसाठीं स्वभावें। तरावें जगा तारुन
मायताता। नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥२॥

वसे जो सदा दावया संतलीला। दिसे अज्ञ
लोकांपरी जो जनाला। परी अंतरी ज्ञान
कैवल्यदाता। नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥३॥

बरा लाधला जन्म हा मानवाचा। नरा सार्थका
साधनीभूत साचा॥ धरूं सांप्रिमा गळाया अहंता।
नमस्कार साष्टांग श्री साईनाथा ॥४॥

धरावें करीं सान अल्पज्ञ बाला। करावें अम्हां
धन्य चुबोनि गाला। मुखीं घाल प्रेमे खरा ग्रास
आतां। नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥५॥

सुरादीक ज्यांच्या पदा वंदिताती। शुकादीक
ज्यांते समानत्व देती॥ प्रयागादि तीर्थे पदीं नम
होतां। नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥६॥

तुझ्या ज्या पदा पाहतां गोपबाली। सदा रंगली
चित्स्वस्पीं मिळाली॥ करी रासक्रीडा सर्वे
कृष्णनाथा। नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥७॥

तुला मागतो मागणे एक घावें। करा जोडितो
दीन अत्यंत भावें॥ भर्वीं मोहनीराज हा तारि
आता। नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥८॥

(८) प्रार्थना

एसा यई बा। साई दिगंबरा। अक्षयस्य अवतारा।
सवहि व्यापक तं। श्रुतिसारा। अनुसयाष्ट्रिकुमारा ॥९॥
काशी स्नान जप, प्रतिदिवशीं। कोल्हापुर भिक्षेसी।
निर्मल नदि तुंगा, जल प्राशी। निद्रा माहुर देशीं
॥१०॥ झोळी लोंबतसे वाम करीं। त्रिशूल-
डमर-धारी। भक्तां वरद सदा सुखकारी। देशील
मुक्ति चारी ॥११॥ पायीं पादुका जपमाला
कमङ्गल मृगछाला। धारण करिशी बा। नागजटा
मुगुट शोभतो माथां ॥१२॥ तत्पर तुझ्या या जे
ध्यानीं। अक्षय त्यांचे सदनीं। लक्ष्मी वास करो
दिनरजनीं। रक्षिति संकट वासनि ॥१३॥ या
परिध्यान तुझे गुरुराया। दृश्य करीं नयनां या।
पूणिनंदसुखे ही काया। लाविसि हस्तिण गाया॥१४॥

(९) श्रीसाईनाथमहिम्नस्तोत्रम्

सदा सत्स्वरपं चिदानंदकंदं, ज्ञात्संभवस्थानसंहारहेतुम्।
स्वभक्तेच्छ्या मानुषं दर्शयितं, नमामीश्वरं सदगुरुं
साईनाथम् ॥१॥

भवध्वांतविघ्वंसमार्तडमीडयं, म्नोवागतीतं
मुनीर्थनिगम्यम्। जगद्व्यापकं निर्मलं निर्णिं त्वा,
नमामीश्वरं सदगुरुं साईनाथम् ॥२॥

भवाभोधिमन्नार्दितानां ज्ञानानां, स्वपाद्याश्रितानां
स्वभक्तिष्ठियाणाम्। समुद्गरणार्थं कल्लौ संभवंतं,
नमामीश्वरं सदगुरुं साईनाथम् ॥३॥

सदा निंबवृक्षस्य मूलधिवासात्सुधासाकिणं तिक्तमप्यप्तियं
तम्। तर्हु कल्पवृक्षाधिकं साधयितं, नमामीश्वरं सदगुरुं
साईनाथम् ॥४॥

सदा कल्पवृक्षस्य तस्याधिमूले भवद्ग्रव्युद्ध्या
सप्त्यादिसेवाम्। नृणां कुर्वतां भुवितमुक्तिष्ठदं तं,
नमामीश्वरं सदगुरुं साईनाथम् ॥५॥

अनेकाश्रुतातकर्यलीलाविलासैः,
समाविष्टकृतेशानभास्वत्प्रभावम्। अहंभावहीनं
प्रसन्नात्मभावं, नमामीश्वरं सदगुरुं साईनाथम् ॥६॥

सताःविश्वमाराममेवाभिरामं सदा सज्जनैः संस्तुतं
सद्गमदभिः। जनामोददं भक्तमद्वप्रदं तं, नमामीश्वरं
सदगुरुं साईनाथम् ॥७॥

अजन्माध्यमेकं परं ब्रह्म साक्षात्क्यं संभवं
राममेवावतीर्णम्। भवद्दर्शनात्संपुनीतः प्रभोऽहं, नमामीश्वरं
सदगुरुं साईनाथम् ॥८॥

श्रीसाईशक्यानिधेष्विकल्पृणा स्वर्थिसिद्धिप्रद।
युष्मस्पादरूजग्रभावमतुलं धातापि वक्ताष्क्षमः ॥ सद्भक्त्या
शरणं कृताजिल्पिष्टं संप्राप्तिष्ठिस्मि प्रभो,
श्रीमत्साईप्रेशयादकम्लान्नपच्छरप्यं मम् ॥९॥

साईस्पृथत्तराववोत्तमं, भक्तकामविद्युद्गुणं प्रसुत्।
माययोफृतचित्तशुद्धये, चिंत्याम्यहमहर्निशं मुदा ॥१०॥

शरत्सुधांशुष्टिमप्काशां, कृपापात्रं तत्र साईनाथा
तदीयाद्यज्जसमाश्रितानां स्वच्छस्या ताप्मपाक्षरोतु ॥११॥

उपासनादैवतसाईनाथ, स्तैर्मयो-पासनिना स्तुतस्त्वम्।
स्मेन्मनो मे तत्र पाद्युम्पे, भृङ्गो, यथावजे
मकर्त्तद्वल्प्यः ॥१२॥

अनेकजन्मर्जीतिपापसंक्षयो, भवेद्भवत्यादसरोजदर्शनात्।
क्षमस्व स्वनिम्नसाधारूजकामप्रसीद साईशं गुरो दयानिध ॥१३॥

श्रीसाईनाथचरणामृतप्रतचित्तास्तत्पादसेवनरताज्ज्ञतं च
भक्त्या। संसारजन्मद्वितीयविभिर्नितास्ते कैवल्यधामं परमं
समवाप्नुवन्ति ॥१४॥

(१०) प्रार्थना

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विदितमविदितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे (श्रीप्रभो साईनाथ) ॥१॥

श्रीसच्चिदानंदसदगुरुं साईनाथ महाराज की जय